NEWSLETTER

शनिवार, 15 जून 2024 | वॉल्यूम - 102

Interview | Cotton Weekly Physical chart | Share Market Update | Important News

"किसानों का रुझान: जहां मुनाफा, वहीं खेती का रुख"

GOLD :71955
SILVER : 89155
CRUDE OIL : 6571

"किसानों का रुझान: जहां मुनाफा, वहीं खेती का रुख"

जलपेश वि पडालिया

मनावदर, जिला जूनागढ़

कपास की सटीक जानकारी के संदर्भ में गुजरात जूनागढ़ जिले के कपास किसान श्री जलपेश भाई से एसआईएस (SIS) टीम ने चर्चा की ।

जलपेश भाई सालो से कपास की खेती करते है। चालू सीजन में 22 वीघा में कपास की बुआई की थी। जूनागढ़ जिले के मानवदार क्षेत्र में हर साल कपास का उत्पादन करते है। आगे वह बताते है की इस वर्ष किसान कपास की बुआई कम कर रहा है, क्योकि पिछले वर्ष किसान को कपास की फसल से फायदा नहीं हुवा, किसान ने जो अंदाजा लगाया था 20 किलो कपास का रुपये 1800 से 2000 तक का भाव मिलेगा उसके बदले में उनको 1400 से 1450 का भाव मिला जो बहुत कम है। जो किसान कपास की बुआई करना चाहते है, अभी तक उनके क्षेत्र में पानी की कमी की वजह से कपास की बुआई नहीं हुई है। कपास की बुआई के लिए बारिश का इंतजार हो रहा है। पर जिसके पास पानी की व्यवस्था है उनके खेत में कपास की सोइंग हो गई है।

आगे वह बताते है की किसान कपास के बदले में मूंगफली की फसल में ज्यादा दिलचस्पी ले रहा है। कारण, कपास से ज्यादा मूंगफली के भाव किसान को अच्छे मिले थे। दूसरा कारण है कपास की फसल का समय 5 से 6 महीने का होता है, जबकि मूंगफली का समय की सीमा कम होती है, जिसके कारण किसान मूंगफली के बाद ठण्ड के समय पर जीरा, धनिया, तुवर इत्यादि जैसी दूसरी फसल का भी फायदा ले सकता है इन्ही कारणों से, किसान कपास की फसल न करके दूसरी फसल की और जा रहा है। कपास की फसल का चक्र में 5 से 6 महीने तक का होने से जब गरमी आती है तब किसान के पास पानी की कमी हो जाती है। जबकि मूंगफली की फसल का समय निश्चित होता है उसका फल 130 दिन में पक जाता है, बाद जो कम पानी वाली फसल जो 90 से 100दिन की होती है उसकी फसल का वह उपयोग कर सकते है, इसीलिए कपास से दूसरी फसल की और जा रहा है।

कपास से अधिक अन्य फसलें क्यों हैं फायदेमंद? किसानों के लिए फायदे और विकल्प

मिट्टी की सेहत : कपास की खेती मिट्टी की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। अन्य फसलों की विविधता से मिट्टी की सेहत बेहतर रहती है और उर्वरक की आवश्यकता कम होती है।

जल की खपत : कपास की खेती में अधिक पानी की आवश्यकता होती है। सूखा प्रभावित क्षेत्रों में ऐसी फसलों का चयन करना बेहतर होता है जिनमें पानी की खपत कम हो, जैसे कि बाजरा, मूंगफली, या सोयाबीन।

कीट और बीमारियों का प्रबंधन : कपास की फसल पर कीट और बीमारियों का हमला ज्यादा होता है। विभिन्न फसलों की खेती से कीट और बीमारियों का प्रकोप कम होता है और रासायनिक दवाओं की जरूरत भी कम होती है।

आर्थिक स्थिरता : एक ही फसल पर निर्भर रहने से किसानों को आर्थिक जोखिम होता है। विविध फसलों की खेती से आय के स्रोत बढ़ते हैं और जोखिम कम होता है।

मौसमी और बाजार मांग : मौसम और बाजार की मांग के अनुसार फसल का चयन करना अधिक लाभकारी हो सकता है। सब्जियों, दलहन, और तिलहन जैसी फसलों की मांग वर्षभर रहती है।

कॉटन मार्केट की साप्ताहिक हलचल पर एक नजर

SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775 WEEKLY CHART 15.06.2024			
ICE COTTON			
MONTH	07.06.24	14.06.24	WEEKLY CHANGE
JULY	73.84	70.97	-2.87
DEC	72.89	72.14	-0.75
MAR'25	74.64	73.43	-1.21
MCX (COTTON)			
JULY	56900	56240	-660
SEP			
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1569	1567.5	-1.5
NCDEX (COCUD KHAL)			
JUNE	2619	2671	52
JULY	2712	2729	17
AUG	2799	2811	12
SMART INFO SERVICE		**CALL : 91119 77775**	
CURRENCY ($)			
INDIAN (Rupee)	83.37	83.56	0.19
PAK (Pakistani Rupee)	278.428	278.489	0.061
CNY (Chinese yuan)	7.24746	7.25576	0.0083
BRAZIL (Real)	5.34650	5.37721	0.03071
AUSTRALIAN Dollar	1.51753	1.51253	-0.005
MALAYSIAN RINGGITS	4.69389	4.71995	0.02606
COTLOOK "A" INDEX	84.65	81.85	-2.8
BRAZIL COTTON INDEX	73.95	72.42	-1.53
USDA SPOT RATE	66.34	65.39	-0.95
MCX SPOT RATE	56200	55960	-240
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	19700	19700	0
GOLD ($)	2311.20	2348.40	37.2
SILVER ($)	29.273	29.625	0.352
CRUDE ($)	75.38	78.49	3.11

इंटरनेशनल कॉटन एक्सचेंज के भाव जुलाई 2.87, दिसंबर 0.75 एवं मार्च 1.21 सेंट तक गिरे।

भारतीय बाजार MCX पर कॉटन के दाम में जुलाई माह के लिए 660 रुपऐ की गिरावट देखी गई।

NCDEX पर कपास के भाव 1.50 रूपए प्रति 20 किलो तक गिरे, वहीं खल के भाव में जून माह 52 रुपए जुलाई माह 17 और अगस्त माह 12 रुपए प्रति क्विंटल तक बढ़त दर्ज की गई |

अन्य देशों के कॉटन मार्केट पर नजर करें तो कॉटलुक "ए" इंडेक्स में गिरावट देखी गई, USDA स्पॉट रेट भी 0.95 सेंट गिरे, MCX स्पॉट 240 रुपए प्रति कैंडी भाव में गिरावट रही, वही ब्राजील कॉटन इंडेक्स 1.53 गिरा।

देश भर के प्रमुख कपास उत्पादक राज्यों में इस सप्ताह कपास की आवक

SMART INFO SERVICES ALL INDIA COTTON WEEKLY ARRIVAL CALL : 91119 77775						
STATE	10.06.24	11.06.24	12.06.24	13.06.24	14.06.24	15.06.24
PUNJAB	-	-	-	-	-	-
HARYANA	700	800	700	600	600	600
UPPER RAJASTHAN	-	-	-	-	-	-
LOWER RAJASTHAN	-	-	-	-	-	-
NORTH ZONE	700	800	700	600	600	600
GUJRAT	5,500	5,500	5,000	5,500	5,500	5,000
MADHYA PRADESH	1,500	1,000	1,000	1,000	1,000	500
MAHARASHTRA	15,000	15,000	15,000	15,000	15,000	14,000
CENTRAL ZONE	22,000	21,500	21,000	21,500	21,500	19,500
KARNATAKA	800	800	800	700	900	800
ANDHRA PRADESH	1,500	1,400	1,500	1,500	1,500	1,200
TELANGANA	200	200	200	200	200	300
TAMILNADU	-	-	-	-	-	-
SOUTH ZONE	2,500	2,400	2,500	2,400	2,600	2,300
ODISHA	-	-	-	-	-	-
TOTAL	25,200	24,700	24,200	24,500	24,700	22,400
ARRIVAL IN 170 Kg.						

पंजाब: कपास की खेती को नहीं मिल रहा बढ़ावा, 96 हजार एकड़ में सिमटी, क्या है कारण ?

पंजाब के आठ जिले, जो कपास की खेती के लिए प्रसिद्ध हैं, इस बार कपास की खेती का रकबा 96 हजार एकड़ तक सिमट कर रह गया है। 1990 के दशक में पंजाब में कपास के तहत 7 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र हुआ करता था, लेकिन पिछले कई वर्षों में यह धीरे-धीरे सिकुड़ता गया है।

पंजाब में कपास की खेती को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, लेकिन इसके बावजूद कपास की खेती 96 हजार एकड़ में सिमट कर रह गई है। किसान कपास की खेती छोड़कर दूसरी फसलों, जैसे धान की खेती की ओर रुख कर रहे हैं।

कृषि विभाग के आंकड़ों के अनुसार

पिछले वर्ष राज्य में एक लाख 79 हजार एकड़ में कपास की खेती हुई थी, जबकि वर्ष 2022 में यह दो लाख 48 हजार एकड़ थी। कपास की खेती में लगातार गिरावट के पीछे कई कारण हैं, जैसे किसानों को समय पर अच्छे बीज और कीटनाशक उपलब्ध न होना और गुलाबी सुंडी का प्रकोप। इसके अलावा, सितंबर में बारिश के कारण खराब हुई फसल का उचित मुआवजा न मिलने के कारण भी किसानों का कपास की खेती से मोह भंग हो रहा है।

आठ जिले जहां कपास की खेती में गिरावट

प्रदेश के आठ जिले, जो कपास की खेती के लिए पहचाने जाते हैं, वहां इस बार कपास की खेती का रकबा 96 हजार एकड़ भूमि में सिमट कर रह गया है। इन आठ जिलों में कपास की खेती के मौजूदा रकबे की बात करें तो:- फाजिल्का: 50,301 एकड़, बठिंडा: 12,496 एकड़, मानसा: 22,516 एकड़, मुक्तसर साहिब: 10,019 एकड़, संगरूर: 224 एकड़, बरनाला: 440 एकड़, फरीदकोट: 232 एकड़, मोगा: 72.5 एकड़।

83 हजार एकड़ रकबा घटा, धान की खेती में जुटे

इस बार करीब 83 हजार एकड़ कपास की खेती का रकबा कम हुआ है। मोहाली के कृषि विशेषज्ञ मनमोहन सिंह ने बताया कि कपास की खेती के रकबे में गिरावट के पीछे कई कारण हैं। जो 83 हजार रकबा घटा है, उसमें किसान इस बार धान और अन्य फसलों की ओर बढ़े हैं। यह भविष्य के लिए एक संकट भी खड़ा कर सकता है अगर राज्य सरकार कपास की खेती की ओर ध्यान नहीं देती है। मुआवजा नीति में बदलाव, किसानों को हर संभव मदद, अच्छे बीज और कीटनाशक के अलावा अन्य सुविधाएं नहीं दी गईं तो आने वाले सालों में इसका रकबा और घट सकता है। धान जैसी फसलों की ओर किसानों के बढ़ने से जमीनी पानी का संकट भी गहराएगा, जो आने वाले 10 से 15 सालों में एक बड़ा असर डाल सकता है।

पिछले कई वर्षों में सिमट गई कपास की खेती

1990 के दशक में पंजाब में कपास के तहत 7 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र हुआ करता था, लेकिन पिछले कई वर्षों में यह धीरे-धीरे सिकुड़ गया है। 2012-13 में कपास का रकबा 4.81 लाख हेक्टेयर था, जो 2017-18 में घटकर 2.91 लाख हेक्टेयर रह गया। 2018-19 में कपास का रकबा 2.68 लाख हेक्टेयर था। आंकड़ों पर नजर डालें तो 2019-20 में यह घटकर 2.48 लाख हेक्टेयर हो गया और फिर 2020-21 में 2.52 लाख हेक्टेयर और 2021-22 में 2.51 लाख हेक्टेयर हो गया। पंजाब ने 2018-19 में 827 किलोग्राम लिंट प्रति हेक्टेयर की उपज दर्ज की थी, जो 2019-20 में घटकर 691 किलोग्राम लिंट प्रति हेक्टेयर हो गई। यह और गिरकर 437 किलोग्राम लिंट प्रति हेक्टेयर रह गई।

TOP 5 NEWS OF THE WEEK

- **मई 2024 में भारत का माल निर्यात 9.1% बढ़कर 38.13 बिलियन डॉलर हो गया।**

  आयात और व्यापार घाटा बढ़ा, क्योंकि निर्यातक प्रमुख बाजारों से अधिक मांग की उम्मीद कर रहे हैं

- **सूत्रों का कहना है कि भारत में मानसून की सुस्ती के कारण उत्तर में गर्मी की लहर लंबे समय तक जारी रह सकती है।**

  दो वरिष्ठ मौसम अधिकारियों ने रॉयटर्स को बताया कि भारत में मानसून की बारिश ने पश्चिमी क्षेत्रों को समय से पहले कवर करने के बाद अपनी गति खो दी है और उत्तरी तथा मध्य राज्यों में इसके आगमन में देरी हो सकती है, जिससे अनाज उगाने वाले मैदानी इलाकों में गर्मी की लहर बढ़ सकती है।

- **तमिलनाडु में कपड़ा उद्योग अपने पुराने गौरव को पुनः प्राप्त करने के लिए केंद्र सरकार की ओर देख रहा है**

  तमिलनाडु में कपड़ा उद्योग वैश्विक बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त को पुनः प्राप्त करने के लिए कपास पर 11% आयात शुल्क हटाने के लिए केंद्र सरकार से अपील कर रहा है।

- **हनुमानगढ़ : गुलाबी सुंडी के डर से कपास की बुवाई के रकबे में भारी कमी**

  इस सीजन में कपास की बुवाई में भारी कमी आई है और यह पिछले साल के 2 लाख हेक्टेयर से काफी कम है। बुवाई के रकबे में 50% की कमी आई है, जो एक दशक में सबसे कम है। इससे जिले की अर्थव्यवस्था को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं।

- **आदिलाबाद जिले में खरीफ कपास की खेती में वृद्धि की उम्मीद**

  आदिलाबाद: सोयाबीन की जगह कपास की खेती करने वाले किसानों की संख्या में वृद्धि के कारण, इस खरीफ सीजन में आदिलाबाद जिले में कपास की खेती का रकबा बढ़ने की उम्मीद है। मानसून की बारिश शुरू होने के बाद किसानों ने कपास के बीज बोना शुरू कर दिया है।

इस सप्ताह, रुई बाजार में गिरावट वाला माहौल देखा गया

इस सप्ताह, रुई बाजार में गिरावट वाला माहौल देखा गया।

नार्थ झोन के पंजाब , हरियाणा अपर राजस्थान राज्य में 25 -100 प्रति मंड तक की बढ़त देखीं गई।

सेंट्रल झोन के गुजरात और मध्यप्रदेश राज्य में 100-200 रुपए प्रति कैंडी की गिरावट देखीं गई, जबकि महाराष्ट्र राज्य में 500 रुपए प्रति कैंडी की गिरावट रही।

साउथ झोन के कर्णाटक,आंध्र प्रदेश और ओड़िशा राज्य में 400-600 रुपए प्रति कैंडी की गिरावट रही, जबकि तेलंगाना राज्य में स्थिरता देखी गई।

SMART INFO SERVICES
india.smartinfo@gmail.com
Call : 91119 77775

DATE: 15.06.2024

WEEKLY COTTON BALES MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	10.06.24		15.06.24		CHANGE
		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	5,725	5,750	5,700	5,725	-25
HARYANA	27.5/28	5,600	5,625	5,600	5,600	-25
UPPER RAJASTHAN	28	5,425	5,800	5,375	5,700	-100
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	55,500	56,400	55,500	56,300	-100
MADHYA PRADESH	29	56,200	56,700	56,000	56,500	-200
MAHARASHTRA	29+ vid.	56,600	57,000	56,000	56,500	-500
SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	58,300	58,400	57,700	57,800	-600
KARNATAKA	29.5+	56,500	57,000	56,000	56,500	-500
ANDHRA PRADESH	29 mic 4+	56,300	56,800	55,900	56,400	-400
TELANGANA	29.5/30 mm 78-80 RD	57,000	58,000	57,000	58,000	0

NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy

NEWSLETTER

Saturday, 15 June 2024 | Volume - 102

Interview | Cotton Weekly Physical chart | Share Market Update | Important News

"Farmers' Attitudes: Where there is profit, there is farming"

GOLD :71955
SILVER : 89155
CRUDE OIL : 6571

"Farmers' Attitudes: Where there is profit, there is farming"

Jalpesh V Padaliya
(Manavadar,dist. Junagadh)

While the duration of peanut crop is fixed, its fruit ripens in 130 days, later they can use the crop of less water which is of 90 to 100 days, that is why farmers are going towards other crops from cotton.

In the context of accurate information about cotton, the SIS team discussed with Mr. Jalpesh Bhai, a cotton farmer from Junagadh district of Gujarat.

Jalpesh Bhai has been cultivating cotton for years. In the current season, he had sown cotton in 22 bighas. He produces cotton every year in the Manavdar area of Junagadh district. He further tells that this year the farmer is sowing less cotton because last year the farmer did not get any profit from the cotton crop. The farmer had estimated that he would get a price of Rs. 1800 to 2000 for 20 kg of cotton, but instead he got a price of Rs. 1400 to 1450 which is very less. The farmers who want to sow cotton, have not sown cotton yet due to lack of water in their area. Rain is being awaited for sowing cotton. But those who have the facility of water, cotton sowing has been done in their fields.

He further explains that farmers are taking more interest in peanut crop instead of cotton. The reason is that farmers got better prices for peanut than cotton. The second reason is that the duration of cotton crop is 5 to 6 months, while peanut has a shorter duration, due to which farmers can also take advantage of other crops like cumin, coriander, tuvar etc. during winter after peanut. Due to these reasons, farmers are going towards other crops instead of cotton crop. Due to the cycle of cotton crop being of 5 to 6 months, when summer comes, farmers face shortage of water. While

Why are other crops more beneficial than cotton? Benefits and options for farmers

Health of soil: Cotton cultivation affects the quality of soil. Diversity of other crops improves soil health and reduces the need for fertilizers.

Water consumption: Cotton cultivation requires a lot of water. In drought-prone areas, it is better to select crops that consume less water, such as millet, groundnut, or soybean.

Pest and disease management: Cotton crop is more prone to pest and disease attacks. Cultivation of different crops reduces the incidence of pests and diseases and also reduces the need for chemical medicines.

Economic stability: Depending on a single crop exposes farmers to economic risks. Cultivation of diverse crops increases sources of income and reduces risk.

Seasonal and market demand: Selecting crops according to seasonal and market demand can be more profitable. Crops like vegetables, pulses, and oilseeds are in demand throughout the year.

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates. CLICK HERE

FOR MORE INFORMATION
CONTACT - +91 - 91119 77775

A look at the weekly movement of the cotton market

SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775 WEEKLY CHART 15.06.2024			
ICE COTTON			
MONTH	07.06.24	14.06.24	WEEKLY CHANGE
JULY	73.84	70.97	-2.87
DEC	72.89	72.14	-0.75
MAR'25	74.64	73.43	-1.21
MCX (COTTON)			
JULY	56900	56240	-660
SEP			
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1569	1567.5	-1.5
NCDEX (COCUD KHAL)			
JUNE	2619	2671	52
JULY	2712	2729	17
AUG	2799	2811	12
SMART INFO SERVICE		**CALL : 91119 77775**	
CURRENCY ($)			
INDIAN (Rupee)	83.37	83.56	0.19
PAK (Pakistani Rupee)	278.428	278.489	0.061
CNY (Chinese yuan)	7.24746	7.25576	0.0083
BRAZIL (Real)	5.34650	5.37721	0.03071
AUSTRALIAN Dollar	1.51753	1.51253	-0.005
MALAYSIAN RINGGITS	4.69389	4.71995	0.02606
COTLOOK "A" INDEX	84.65	81.85	-2.8
BRAZIL COTTON INDEX	73.95	72.42	-1.53
USDA SPOT RATE	66.34	65.39	-0.95
MCX SPOT RATE	56200	55960	-240
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	19700	19700	0
GOLD ($)	2311.20	2348.40	37.2
SILVER ($)	29.273	29.625	0.352
CRUDE ($)	75.38	78.49	3.11

International Cotton Exchange rates fell by 2.87 cents in July, 0.75 cents in December and 1.21 cents in March.

Cotton prices on Indian market MCX fell by Rs. 660 for the month of July.

Cotton prices on NCDEX fell by Rs. 1.50 per 20 kg, while the price of oil cake increased by Rs. 52 in June, Rs. 17 in July and Rs. 12 per quintal in August.

If we look at the cotton market of other countries, Cotlook "A" index saw a fall, USDA spot rate also fell by 0.95 cents, MCX spot price fell by Rs. 240 per candy, while Brazil cotton index fell by 1.53 cents.

Cotton arrival this week in major cotton producing states across the country

SMART INFO SERVICES ALL INDIA COTTON WEEKLY ARRIVAL CALL : 91119 77775						
STATE	10.06.24	11.06.24	12.06.24	13.06.24	14.06.24	15.06.24
PUNJAB	-	-	-	-	-	-
HARYANA	700	800	700	600	600	600
UPPER RAJASTHAN	-	-	-	-	-	-
LOWER RAJASTHAN	-	-	-	-	-	-
NORTH ZONE	700	800	700	600	600	600
GUJRAT	5,500	5,500	5,000	5,500	5,500	5,000
MADHYA PRADESH	1,500	1,000	1,000	1,000	1,000	500
MAHARASHTRA	15,000	15,000	15,000	15,000	15,000	14,000
CENTRAL ZONE	22,000	21,500	21,000	21,500	21,500	19,500
KARNATAKA	800	800	800	700	900	800
ANDHRA PRADESH	1,500	1,400	1,500	1,500	1,500	1,200
TELANGANA	200	200	200	200	200	300
TAMILNADU	-	-	-	-	-	-
SOUTH ZONE	2,500	2,400	2,500	2,400	2,600	2,300
ODISHA	-	-	-	-	-	-
TOTAL	25,200	24,700	24,200	24,500	24,700	22,400
ARRIVAL IN 170 Kg.						

Punjab: Cotton cultivation is not getting a boost, limited to 96 thousand acres, what is the reason?

In eight districts of Punjab, which are famous for cotton cultivation, this time the area under cotton cultivation has been reduced to 96 thousand acres. In the 1990s, there used to be more than 7 lakh hectares of area under cotton in Punjab, but it has gradually shrunk over the past several years.

The state government has taken many important steps to promote cotton cultivation in Punjab, but despite this, cotton cultivation has been reduced to 96 thousand acres. Farmers are leaving cotton cultivation and turning to other crops, such as paddy cultivation.

According to the data of the Agriculture Department

Last year, cotton was cultivated in one lakh 79 thousand acres in the state, while in the year 2022 it was two lakh 48 thousand acres. There are many reasons behind the continuous decline in cotton cultivation, such as non-availability of good seeds and pesticides to farmers on time and the outbreak of pink bollworm. Apart from this, farmers are also getting disillusioned with cotton farming due to not getting proper compensation for the crop damaged due to rain in September.

Eight districts where cotton cultivation has declined

In the eight districts of the state, which are known for cotton cultivation, this time the area of cotton cultivation has been reduced to 96 thousand acres. Talking about the current area of cotton cultivation in these eight districts:- Fazilka: 50,301 acres, Bathinda: 12,496 acres, Mansa: 22,516 acres, Muktsar Sahib: 10,019 acres, Sangrur: 224 acres, Barnala: 440 acres, Faridkot: 232 acres, Moga: 72.5 acres.

Area reduced by 83 thousand acres, engaged in paddy cultivation

This time the area of cotton cultivation has reduced by about 83 thousand acres. Mohali agriculture expert Manmohan Singh said that there are many reasons behind the decline in the area of cotton cultivation. In the area which has decreased by 83 thousand, farmers have moved towards paddy and other crops this time. This can also create a crisis for the future if the state government does not pay attention to cotton cultivation. If changes are not made in the compensation policy, every possible help to the farmers, good seeds and pesticides and other facilities are not provided, then its area may decrease further in the coming years. The ground water crisis will also deepen due to farmers moving towards crops like paddy, which can have a big impact in the coming 10 to 15 years.

Cotton cultivation has shrunk in the last several years

In the 1990s, there used to be more than 7 lakh hectares of area under cotton in Punjab, but it has gradually shrunk in the last several years. In 2012-13, the area under cotton was 4.81 lakh hectares, which decreased to 2.91 lakh hectares in 2017-18. The area under cotton was 2.68 lakh hectares in 2018-19. Looking at the data, it declined to 2.48 lakh hectares in 2019-20 and then to 2.52 lakh hectares in 2020-21 and 2.51 lakh hectares in 2021-22. Punjab had recorded a yield of 827 kg lint per hectare in 2018-19, which declined to 691 kg lint per hectare in 2019-20. It further fell to 437 kg lint per hectare.

TOP 5 NEWS OF THE WEEK

- **India's merchandise exports rose 9.1% to $38.13 billion in May 2024.**

  Imports and trade deficit widened as exporters expect higher demand from key markets

- **Sources say heat wave in the north may continue for longer due to sluggish monsoon in India.**

  Monsoon rains in India have lost their momentum after covering western regions ahead of schedule and may delay its arrival in northern and central states, worsening heat wave conditions in the grain-growing plains, two senior weather officials told Reuters.

- **Textile industry in Tamil Nadu looks to central government to regain its old glory**

  The textile industry in Tamil Nadu is appealing to the central government to remove 11% import duty on cotton to regain its competitive edge in the global market.

- **Hanumangarh: Huge reduction in cotton sowing area due to pink bollworm fear**

  Cotton sowing has come down drastically this season and is much less than last year's 2 lakh hectares. The sowing area has come down by 50%, which is the lowest in a decade. This has raised concerns about the economy of the district.

- **Kharif cotton cultivation expected to increase in Adilabad district**

  Adilabad: Due to an increase in the number of farmers cultivating cotton instead of soybean, the area under cotton cultivation is expected to increase in Adilabad district this Kharif season. Farmers have started sowing cotton seeds after the onset of monsoon rains.

This week, the cotton market witnessed a downward trend

North Zone states of Punjab, Haryana and Upper Rajasthan witnessed a rise of Rs. 25-100 per candy.

Central Zone states of Gujarat and Madhya Pradesh witnessed a decline of Rs. 100-200 per candy, while Maharashtra witnessed a decline of Rs. 500 per candy.

South Zone states of Karnataka, Andhra Pradesh and Odisha witnessed a decline of Rs. 400-600 per candy, while Telangana witnessed stability.

SMART INFO SERVICES
india.smartinfo@gmail.com
Call : 91119 77775

DATE: 15.06.2024

WEEKLY COTTON BALES MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	10.06.24		15.06.24		CHANGE
		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	5,725	5,750	5,700	5,725	-25
HARYANA	27.5/28	5,600	5,625	5,600	5,600	-25
UPPER RAJASTHAN	28	5,425	5,800	5,375	5,700	-100
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	55,500	56,400	55,500	56,300	-100
MADHYA PRADESH	29	56,200	56,700	56,000	56,500	-200
MAHARASHTRA	29+ vid.	56,600	57,000	56,000	56,500	-500
SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	58,300	58,400	57,700	57,800	-600
KARNATAKA	29.5+	56,500	57,000	56,000	56,500	-500
ANDHRA PRADESH	29 mic 4+	56,300	56,800	55,900	56,400	-400
TELANGANA	29.5/30 mm 78-80 RD	57,000	58,000	57,000	58,000	0

NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates. CLICK HERE

FOR MORE INFORMATION
CONTACT - +91 - 91119 77775